भाकृअनुप
ICAR

चतुर्थ अंक

2006

करभ

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़, शिवबाड़ी

बीकानेर – 334 001 (राजस्थान)

भाकृअनुप
ICAR

2006

चतुर्थ अंक

करभ

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

प्रकाशक व सम्पर्क सूत्र
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी
बीकानेर - 334 001 (राजस्थान)

सम्पादक मण्डल

संरक्षक : **डॉ. गंगा प्रसाद सिंह**
निदेशक (कार्यवाहक)

प्रधान सम्पादक : **डॉ. राघवेन्द्र सिंह**
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी राजभाषा

सम्पादक : **नेमीचन्द बारग्सा**
हिन्दी अनुवादक

कार्यकारी सदस्य : **डॉ. शरत चन्द्र मेहता**
वरिष्ठ वैज्ञानिक

डॉ. निर्मला सैनी
वैज्ञानिक (व.वै.)

डॉ. उमेश कुमार बिस्सा
वरिष्ठ पशु चिकित्सक

श्री कँवर पाल शर्मा
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

मुद्रक : **आर.जी. एसोसिएटस्**
बीकानेर-334 001
दूरभाष : 0151-2527323

अनुक्रम

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
	वैज्ञानिक एवं तकनीकी आलेख	
1.	उष्ट्र गणना में कमी : एक चिंतनीय विषय	13
2.	प्रदेश के पशुधन को अकाल से कैसे बचाएं?	18
3.	इथोलॉजी : ऊँटों में सामान्य व्यवहार	21
4.	ऊँटनी के दूध की गुणवत्ता	24
5.	मरु चारागाह संरक्षण एवं जनसहभागिता	25
6.	नहरों की खरपतवार से जैविक खाद तैयार करें	30
7.	वातवारण परिवर्तन के समय पशु स्वास्थ्य की देखभाल	32
8.	वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा नवजात ऊँटों का परिपालन	35
9.	भारतीय मरुस्थल के औषधीय पौधे व उनका महत्त्व	38
10.	दो कूब्बड़ ऊँट के बालों की विशेषताएँ व उत्पाद	41
11.	डी.एन.ए. फिंगर प्रिंटिंग–नूतन एवं सशक्त बहुपयोगी तकनीक	43
12.	पशु उत्पादन सम्बन्धी पर्यावरणीय कारक	49
13.	उष्ट्र की लार का भौतिक–रसायनिक अध्ययन	50
14.	क्यों और कैसे करें बाग में मृदा प्रबन्धन प्रक्रियाएँ	51
15.	पशुओं में सर्रा रोग	53
16.	उष्ट्र विकास एवं संरक्षण	54
17.	शारीरिक तापमान, नाड़ी गति व श्वसन क्रिया से पशु स्वास्थ्य को जानें	56
18.	ऊँटों में परजीवी रोग, लक्षण एवम् रोकथाम	59
19.	प्रमुख भारतीय प्रलेखन एवम् सूचना केन्द्र एवम् उनके कार्य	65
20.	संक्रमित ई–मेल से बचिए	68
21.	पशु आहार प्रौद्योगिकी	71
22.	हमें प्यास क्यों लगती है?	75
23.	अदुग्धदायिनी एवं दुग्धदायिनी थारपारकर गौवंश में कुछ महत्वपूर्ण जैव–रासायनिक घटाकों का अध्ययन	77

24. नरमें की अधिक पैदावार देने वाली नई संकर किस्म सी.एस.एस.एच.238 78
25. जानवर भी दुःखी होते हैं 82
26. भारतीय कृषि की दुर्दशा – जैविक खेती : एक चिन्तन 85
27. बायो डीजल ऊर्जा का स्रोत रतनजोत 86
28. अगर्भित एवं गर्भित थारपारकर गौवंश में कुछ महत्वपूर्ण जैव–रासायनिक घटकों पर गर्भित अवस्था के तनाव का अध्ययन 88
29. मारवाड़ी भेड़ों में प्रेरित गलग्रन्थि अल्पक्रियता (हाइपोथॉइीराइडिज्म) के कारण दृष्टिगत प्रभावों को निर्धारित करने वाले रक्त के कुछ महत्वपूर्ण जैवरासायनिक घटकों का अध्ययन 89

साहित्यिक आलेख एवं कविताएँ

30. बाजारवादी परिदृश्य और हिन्दी 93
31. राजभाषा एवं संवैधानिक व्यवस्था 97
32. राजस्थान के हिन्दी साहित्य में महिला लेखन : आठवें दशक से पूर्व 99
33. हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में मीडिया का योगदान 105
34. प्रेम गली अति सांकरी.... 108
35. उष्ट्र निमन्त्रण / मेहरबान ऊँट 111
36. बरस गया पानी 112
37. हिन्दी चेतना मास, 2005 117
38. राजभाषा कार्यशाला (22 मार्च, 2006) कार्यशाला प्रतिवेदन 121
39. राजभाषा कार्यशाला (6–7 जुलाई, 2006) कार्यशाला प्रतिवेदन 123
40. उष्ट्र की गुहार 127
41. यह भी जानें 128
42. अनमोल वचन 129
43. आपके पत्र 130

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में रचनाकार के अपने विचार हैं और उनसे सहमत अथवा असहमत होना हिन्दी पत्रिका 'करभ' के सम्पादक मण्डल के लिए आवश्यक नहीं है।

संरक्षक की कलम से.....

मुझे केन्द्र की राजभाषा पत्रिका 'करभ' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। आज हमारा केन्द्र देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी शोध व पर्यटन–स्थल के रूप में जाना जाता है। केन्द्र में उष्ट्र पर की जाने वाली शोध को किसानों/ऊँट पालकों तथा आमजन के लाभ को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। केन्द्र भी इस पर गहन मनन कर रहा हैं कि उष्ट्र में विद्यमान विलक्षण विशेषताओं को अधिकाधिक प्रकाश में लाया जाए। यह समय की माँग भी है। क्योंकि इस परिवर्तनशील विश्व ने जितना ऊँट को प्रभावित किया है उतना शायद ही किसी अन्य पशु को किया होगा। ऊँट की इस स्थिति को लेकर मन मस्तिष्क में चिंता की रेखाएं उभरना भी स्वाभाविक है।

हमारे देश में सर्वाधिक लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा हिन्दी भाषा ही है। इस भाषा को देश का एक पढा–लिखा व्यक्ति भी अच्छी तरह से समझ सकता है जितना एक अनपढ़ हल चलाने वाला एक किसान या एक ऊँट पालक। हमारा मुख्य लक्ष्य हर सूचना का संप्रेषण इस भाषा के माध्यम से करना है जो अन्ततः इसे प्रयुक्त करने वाले को तथा इस पशु को फायदा दिलाए व समय के साथ इसे जोड़े रखे।

हमारे केन्द्र की प्राथमिकता 'करभ' पत्रिका के माध्यम से ऊँट पर की गई हर नूतन शोध व तकनीकी जानकारी को तथा प्रदेश की पारिस्थितिकी को आलेखों के माध्यम से प्रकाश में लाने की है। साथ ही इससे राजभाषा का भी उतरोत्तर विकास हो सके। हमारा प्रयास होगा कि राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन हेतु सभी अपेक्षित कार्यक्रम/गतिविधि को और अधिक गति प्रदान की जाए। हमारे देश की राजभाषा होने के नाते यह हमारा दायित्व भी बनता है।

मैं, राजभाषा पत्रिका 'करभ' के चतुर्थ वार्षिक अंक के प्रकाशन पर केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जो केन्द्र के विषय को राजभाषा के माध्यम से प्रकट करने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे है तथा केन्द्र से बाहर के उन रचनाकारों का भी हार्दिक आभार देना चाहूँगा जो 'करभ' में अपनी भाषा के प्रति जागरूक व स्वस्थ सोच का परिचय दे रहे हैं।

गंगा प्रसाद सिंह

गंगा प्रसाद सिंह
निदेशक (कार्यकारी)

प्राक्कथन

हिन्दी एक सरल, सुन्दर व सुग्राही भाषा है। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली यह भाषा 'कथनी व करनी' में विभेद उत्पन्न नहीं करती है। हिन्दी किसी भी भाषा के शब्दों को लिप्यंतरण द्वारा प्रकट करने में यह पूर्णतया सक्षम है। सर्वश्रेष्ठ भाषा की श्रेणी में रखी जाने वाली हिन्दी भाषा ने समय के अनुरूप अपने आप को प्रभावी व सशक्त बनाया है।

राजभाषा में वैज्ञानिक अनुसंधानों के साथ–साथ मरूक्षेत्र की समस्या एवं प्रबंधन संबंधी उपयोगी जानकारी आमजन तक पहुँचे, यही 'करभ' पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है। देश में वैज्ञानिक उपलब्धियों को ऐसी ही पत्रिकाओं के माध्यम से आम जन तक सरलता से पहुँचाया जा सकता है। देश के सर्वांगीण विकास हेतु इसकी महत्ती आवश्यकता भी है। आने वाले समय में पत्रिका ''करभ'' का मुख्य लक्ष्य इसे पूर्णतया वैज्ञानिक पत्रिका का रूप दिया जाना होगा।

''करभ'' पत्रिका निरंतर अपने आप को उपयोगी व सार्थक बनाए हुए है। केन्द्र निदेशक (कार्य.) डॉ. गंगा प्रसाद सिंह के विशेष आभी हैं जिन्होंने राजभाष में गहरी रुचि दिखाते हुए 'करभ' के इस अंक के प्रकाशन हेतु प्रोत्साहित किया। पत्रिका के चतुर्थ अंक हेतु अद्यतन व उपयोगी सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु केन्द्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों का हार्दिक आभार। साथ ही केन्द्र के अलावा अन्य संस्थानों के अधिकारियों व साहित्य से जुड़े भाषाशास्त्रियों का हिन्दी भाषा के प्रति रचनाओं के माध्यम से अमूल्य सेवा देना उनकी सच्ची श्रद्धा को प्रकट करता है।

राघवेन्द्र

(राघवेन्द्र सिंह)
प्रधान सम्पादक